संपादकीय

सूखे की गिरफ्त में

मॉनसून में देरी ने देश में सूखे के संकट को गंभीर बना दिया है। आईआईटी, गांधीनगर द्वारा चलाए जा रहे सूखा प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली के अनुसार देश के 40 फीसदी से अधिक क्षेत्रों में सूखे का संकट है जबकि ड्राउट अर्ली वार्निंग सिस्टम (ड्यूज) के अनुसार देश के 44 फीसदी हिस्से किसी न किसी रूप में सूखे से प्रभावित हैं। चालू मॉनसून सीजन में मॉनसून का आगमन ही 8 दिन की देरी से हुआ है। साथ ही कई राज्यों में प्री-मॉनसून की बारिश भी सामान्य से काफी कम हुई है जिसकी वजह से भयावह जल संकट पैदा हो गया है और कृषि पैदावार में भी कमी आने की आशंका गहरा रही है। 20 जून को समाप्त सप्ताह के दौरान देश के 91 प्रमुख जलाशयों में 27.265 बीसीएम (बिलियन क्यूबिक मीटर) जल संग्रह हुआ। यह इन जलाशयों की कुल संग्रहण क्षमता का मात्र 17 प्रतिशत है। पिछले दिनों चेन्नै के संकट की खबर आई। वहां इसी सप्ताह चार जलाशय सूख गए और अब बहुत कम मात्रा में पानी बचा हुआ है। संकट दूर करने के लिए वहां वेल्लोर के जोलारपेट से एक करोड़ लीटर पानी विशेष ट्रेन के जरिए भेजा जाएगा।

दूसरे महानगरों का भी हाल बहुत अच्छा नहीं है। बेंगलुरु का भूजल स्तर पिछले दो दशक में 10-12 मीटर से गिर कर 76-91 मीटर तक जा पहुंचा है। दिल्ली का भूजल भी लगातार कम हो रहा है। महाराष्ट्र 47 साल का सबसे बड़ा सूखा झेल रहा है। अन्य कई राज्य भी इसकी चपेट में आ गए हैं। नीति आयोग की एक रिपोर्ट के अनुसार अगले एक वर्ष में जलसंकट की इस समस्या से 10 करोड़ लोग प्रभावित होंगे, वहीं 2030 तक देश की 40 फीसदी आबादी इस गंभीर समस्या की चपेट में होगी। सच तो यह है कि मौसम में आ रहा बदलाव लगातार हमारे ऊपर गहरा असर डाल रहा है। इस बदलाव को अच्छे से समझकर उसके अनुरूप नीतियां बनानी होंगी। भारतीय मौसम विभाग (आईएमडी) के मुताबिक 2018 में बारिश में 9.4 फीसदी की कमी आई थी। बारिश में लगातार कमी का यह पांचवां साल था। जाहिर है, बारिश में लगातार कमी आती जा रही है। इसे नोटिस में लेने की जरूरत है। हम यह मानकर नहीं बैठ सकते कि हालात

कभी बदल भी सकते हैं। जिस तरह सरकार ने जल शक्ति मंत्रालय का गठन किया है, उसी तरह मॉनसून के आकलन और उसके मुताबिक रणनीति तैयार करने के लिए एक विशेष तंत्र की जरूरत है। अभी तमाम फौरी राहत उपाय करने चाहिए, लेकिन कई दीर्घकालीन कदम भी उठाने होंगे। जल प्रबंधन के साथ सूक्ष्म सिंचाई परियोजनाओं को प्राथमिकता देनी होगी, सूखा प्रतिरोधी फसलों को बढ़ावा देने के साथ पौधारोपण जैसे कार्यक्रमों को बढ़ावा देना होगा।

आरबीआई अधिशेष पर जालान समिति में मतभेद बरकरार, रिपोर्ट लंबित

नईदिल्ली (आरएनएस)। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के अधिशेष का सरकार को हस्तांतरण किए जाने पर फैसला लेने वाली समिति की रिपोर्ट सौंपने में फिर विलंब हो गया है। सूत्रों ने बताया कि आरबीआई की इकॉनोमिक फ्रेमवर्क कैपिटल (ईसीएफ) समिति के सदस्यों में केंद्रीय बैंक की अधिशेष निधि के वितरण को लेकर मतभेद बरकरार है, इसलिए बिमल जालान की अगुवाई वाली इस समिति ने

अपनी रिपोर्ट सौंपने के लिए और समय मांगा है।

पूर्ण बजट के संसद में पेश होने के बाद फिर जुलाई में आरबीआई के पूर्व गवर्नर बिमल जालान की अध्यक्षता में ईसीएफ समिति की बैठक होगी, जिसमें समिति की सिफारिशों को अंतिम रूप प्रदान किया जाएगा। छह सदस्यीय इस समिति को प्रारंभ में अप्रैल में अपनी रिपोर्ट देनी थी, जो सर्वसम्मति नहीं होने के कारण चौथी बार लंबित हो गई। सूत्रों के अनुसार, आर्थिक कार्य सचिव सुभाष चंद्र गर्ग बजट की तैयारी के कारण ईसीएफ समिति की बैठक में शामिल नहीं हो पाए।

छह सदस्यीय इस समिति में पूर्व आरबीआई डिप्टी गर्वनर राकेश मोहन उपाध्यक्ष हैं और उनके अलावा समिति में गर्ग, आरबीआई केंद्रीय बोर्ड के सदस्य भरत दोषी और सुधीर मांकड़ और आरबीआई के डिप्टी गवर्नर एन. एस. विश्वनाथन शामिल हैं। सूत्रों ने बताया कि समिति के कुछ सदस्य आरबीआई की अत्यधिक निधि को चरणबद्ध तरीके से कम करने के पक्ष में हैं, लेकिन सरकार को निधि के हस्तांतरण के पक्ष में नहीं हैं।

हवाई यातायात नियंत्रकों को 31 दिसंबर तक लेना होगा लाइसेंस

नईदिल्ली (आरएनएस)। हवाई यातायात नियंत्रक (एटीसी) अधिकारियों के लिए पहली बार लाइसेंस की व्यवस्था करने के बार सरकार ने सभी मौजूदा एटीसी अधिकारियों के लिए लाइसेंस हासिल करने के लिए 31 दिसंबर 2019 तक का समय तय किया है।

नागरिक उड्डयन क्षेत्र की अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के दबाव में भारत ने करीब छह महीने पहले विदेशों की तर्ज पर भारतीय एटीसी नियंत्रकों के लिए भी लाइसेंस की व्यवस्था शुरू करने का फैसला किया था। अब तक एटीसी अधिकारियों की भर्ती भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण द्वारा की जाती है और प्रवेश परीक्षा तथा गहन प्रशिक्षण के बाद उन्हें यह जिम्मेदारी दी जाती है।

नागरिक उड्डयन मंत्रालय ने एक अधिसूचना में बताया कि जो एटीसी अधिकारी 05 नवंबर 2018 से पहले हवाई यातायात नियंत्रक की जिम्मेदारी निभा रहे थे वे लाइसेंस हासिल करने तक या 31 दिसंबर 2019 तक काम करना जारी रख सकते हैं।

शुरुआती कारोबार में डॉलर के मुकाबले रुपया 13 पैसे मजबूत

मुंबई (आरएनएस)। कच्चे तेल की कीमतों में कमी और विदेशी बाजारों में डॉलर के कमजोर पड़ने से मंगलवार को शुरुआती कारोबार में अमेरिकी मुद्रा के मुकाबले रुपया 13 पैसे मजबूत होकर 69.22 के स्तर पर पहुंच गया। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया मजबूती के साथ 69.32 के स्तर पर खुला एवं और उसके बाद 13 पैसे मजबूत होकर 69.22 रुपये प्रति डॉलर के स्तर पर पहुंच गया। इससे पहले सोमवार को डॉलर के मुकाबले रुपया 69.35 के स्तर पर बंद हुआ था। विदेशी मुद्रा से जुड़े डीलरों ने कहा है कि विदेशी मुद्रा प्रवाह और निर्यातकों द्वारा अमेरिकी मुद्रा की बिक्री से रुपये को मजबूती मिली। इसी बीच शेयर बाजारों के अस्थायी आंकड़ों के मुताबिक सोमवार को विदेशी संस्थागत निवेशकों ने शुद्ध आधार पर 207.33 करोड़ रुपये मूल्य के शेयर खरीदे और घरेलू संस्थागत निवेशकों ने 984.43 करोड़ रुपये की लिवाली की।

दो दिन बाद फिर लगा पेट्रोल-डीजल की महंगाई पर ब्रेक

नईदिल्ली (आरएनएस)। पेट्रोल और डीजल के दाम में पिछले दो दिनों से जारी वृद्धि पर फिर ब्रेक लग गया है। तेल विपणन कंपनियों ने मंगलवार को पेट्रोल और डीजल के दाम में कोई बदलाव नहीं किया। उधर, अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल के दाम में भी नरमी आ गई है। कच्चे तेल के दाम में पिछले दिनों अमेरिका और ईरान के बीच बढ़ते तनाव को लेकर तेजी आई थी, लेकिन सोमवार को सैन्य तनाव कम होने के बाद तेल के दाम में फिर नरमी आ गई है।

इंडियन ऑयल की बेवसाइट के अनुसार, दिल्ली, कोलकता, मुंबई और चेन्नई में पेट्रोल के दाम पूर्ववत क्रमशः 70.05 रुपये, 72.31 रुपये, 75.75 रुपये और 72.77 रुपये प्रति लीटर रहे। चारों महानगरों में डीजल के दाम भी पूर्ववत क्रमशः 63.90 रुपये, 65.82 रुपये, 66.99 रुपये और 67.59 रुपये प्रति लीटर रहे।

अंतर्राष्ट्रीय वायदा बाजार आईसीई पर ब्रेंट क्रूड का सितंबर वायदा अनुबंध पिछले सत्र से 0.50 फीसदी की गिरावट के साथ 63.86 डॉलर प्रति बैरल पर बना हुआ था। वहीं, नायमैक्स पर अमेरिकी लाइट क्रूड वेस्ट डब्ल्यूटीआई का अगस्त डिलीवरी वायदा अनुबंध पिछले सत्र से 0.29 फीसदी की कमजोरी के साथ 57.73 डॉलर प्रति बैरल पर बना हुआ था।

महिला फुटबाल : विश्व कप के क्वार्टर फाइनल में पहुंची अमेरिका

रिम्स,फ्रांस (आरएनएस)। अमेरिका की टीम ने यहां विश्व कप में अपना शानदार प्रदर्शन जारी रखते हुए सोमवार को क्वार्टर फाइनल में जगह बनाई। प्री-क्वार्टर फाइनल में अमेरिका ने एक कड़े मैच में स्पेन को 2-1 से मात दी। समाचार एजेंसी एफे के अनुसार, राउंड ऑफ-16 में पहली बार भाग ले रही स्पेन की टीम ने शारीरिक शक्ति का अधिक उपयोग करने का प्रयास किया। अमेरिका के लिए मुकाबले की शुरुआत दमदार रही और सातवें मिनट में उसे पेनाल्टी

मिली। मेगन रपीनो ने पेनाल्टी को गोल में बदलने में कोई गलती नहीं की और अपनी टीम को 1-0 से आगे कर दिया।

इसके दो मिनट बाद ही स्पेनिश टीम ने वापसी की। जेनिफर हेरमोसो ने शानदार खेल दिखाया और टूर्नामेंट का अपना तीसरा गोल करते हुए स्पेन को बराबरी दिला दी।

पहले हाफ में इसके बाद कोई भी टीम गोल नहीं कर पाई और दूसरे हाफ में भी दोनों टीमों के बीच कड़ी टक्कर हुई। मैच के 76वें मिनट में अमेरिका को एक और पेनाल्टी मिली। इस बार भी रेपीनो ने मौके को भुनाते हुए गोल कर दिया। क्वार्टर फाइनल में अमेरिका का सामना मेजबान फ्रांस से होगा।

बिल गेट्स ने कहा गूगल को एंड्रॉयड लॉन्च करने का मौका देना सबसे बड़ी गलती

माइक्रोसॉफ्ट के को-फाउंडर बिल गेट्स ने एंड्रॉइड और गूगल को लेकर अपनी गलती की जानकारी दी है। बिल गेट्स ने कहा है कि नॉन एप्पल फोन फॉर्म प्लेटफॉर्म लॉन्च न करना और एंड्रॉइड के लिए गूगल को मौका देना उनकी सबसे बड़ी गलती थी। ऐसा इसलिए क्योंकि एंड्रॉइड ओएस लॉन्च कर कंपनी दूसरी कंपनियों को पीछे छोड़ आगे निकल गई है। बिल गेट्स के मुताबिक, अगर उन्होंने इस ओएस को बनाने की पहल की होती या फिर पूंजी लगाई होती तो इस समय माइक्रोसॉफ्ट सबसे बड़ी कंपनी होती। आपको बता दें कि गूगल ने वर्ष 2005 में एंड्रॉइड को 5 करोड़ डॉलर में खरीदा था। इस समय यह सबसे लोकप्रिय ऑपरेटिंग सिस्टम है।

चीन से व्यापार समेट रही कंपनियों को इंसेंटिव देकर लुभा सकता है भारत

चीन में निर्यात बढ़ाने और मेक इन इंडिया के तहत चीनी कंपनियों को अपने देश में उद्योग के लिए आकर्षित करने का यह सबसे मुफीद समय है। यह वह समय है जब भारत अपने सबसे बड़े व्यापारिक साझेदार चीन के साथ अपना व्यापारिक घाटा कम कर सकता है।

वह इसलिए, क्योंकि अमेरिका और चीन के बीच ट्रेड वार के चलते जो स्पेस पैदा हुआ है उसे भरने का सबसे बड़ा मौका भारत के पास ही है। ऐसे में अब भारत ने कंपनियों को लुभाने के प्रयास भी शुरू कर दिये हैं। भारत चीन से अपना व्यापार समेट रही कंपनियों को देश में अपना उद्योग डालने के लिए इंसेंटिव देने की पहल करता भी दिख रहा है। ब्लूमबर्ग की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत अमेरिका-चीन ट्रेड वार के चलते चीन से अपना व्यापार खत्म कर रही कंपनियों को आकर्षित करने के लिए इंसेंटिव की पेशकश कर रहा है।

गारमिन ने भारत में लांच किया फोररनर 945 स्मार्टवाच

नईदिल्ली (आरएनएस)। अमेरिकी कंपनी गारमिन ने सोमवार को भारत में अपना स्मार्टवाच फोररनर 945 लांच किया जिसकी कीमत 59,990 रुपये है। इस डिवाइस में दौड़ने, साइकिल चलाने, तैरने, स्कीइंग पैडल स्पोर्ट्स और ट्रेल रनिंग की गतिविधियों की प्रोफाइल का पैक है। गारमिन इंडिया के नेशनल सेल्स मैनेजर अली रिजवी ने एक बयान में कहा, फोररनर 945 के लांच के साथ हमारा मकसद धावक समुदाय के लिए ज्यादा रोमांच और जोखिम को शामिल करना है। घड़ी में रोमांचकारी फीचर हैं। मसलन प्रीमियम म्यूजिक सर्विस, वीओ2 मैक्स, एरोबिक और एनारोबिक ट्रेनिंग व घटना के बारे में पता लगाना।

स्मार्टवाच में फोन से मुक्त होकर सुनने के लिए 1,000 गाने संग्रह करने की क्षमता है। फोररनर 945 सीरीज का दूसरा फीचर इसका बॉडी बैटरी है जिसमें शरीर की ऊर्जा को अधिकतम बनाने में मदद मिलती है। बॉडी बैटरी इनर्जी मॉनिटरिंग में किसी भी क्षण किसी को ऊर्जा को नापने के लिए संग्रहित आंकड़ों का उपयोग किया जाता है।

आज का राशिफल

मेषः- यदि आप किसी काम के लिए संकल्प लेंगे तो वह कार्य पूर्ण हो जाएगा। आज किसी जरूरी वस्तु की खरीद या फिर कहीं अटका हुआ पैसा निकालेगा।

वृषभः- आप अपने सभी कामकाजी गतिविधियों को जरूरत के मुताबिक संचालित करने में सफल रहते हैं। धन प्राप्ति से कोष वृद्धि होगी।

मिथुनः- यदि आप अपने करियर में बदलाव लाने की कोशिश कर रहे हैं तो अभी स्थितियां ठीक नहीं हैं। किसी भी काम में हाथ डालने से पहले अपने पार्टनर से सलाह ले लें।

कर्कः- आज के दिन किसी नए प्रोजेक्ट पर आपका ध्यान आकर्षित होगा। कुछ पुराने मित्रों से आर्थिक सपोर्ट मिल जाएगा।

सिंहः- नौकरीपेशा लोगों को प्रमोशन और सफलता मिलने की उम्मीद है। आपकी पूंजी में भी बढ़ोतरी होगी, लेकिन शुरुआती निवेश में आपको कुछ सावधान रहने की आवश्यकता है।

कन्याः- नए व्यापार के लिए नई योजनाएं बनेंगी जो आगे चलकर धन लाभ कराएंगी। आज आपको भाई-बहनों का सुख व सहयोग प्राप्त होगा।

तुलाः- करीबी मित्र के लिए कुछ धन की भी व्यवस्था करनी पड़ सकती है। कार्यक्षेत्र में आप अपने जूनियर्स के लिए भी थोड़ा सा प्रोटेक्टिव महसूस करेंगे।

वृश्चिकः- अपने बिजनस या जॉब को सुधारने के लिए परिवर्तन करना आवश्यक होगा। आर्थिक फील्ड में अभी ज्यादा प्रेसर नहीं है। कानूनी विवाद में सफलता, ट्रांसफर की योजना सफल हो सकती है।

धनुः- कार्यालय में आपके अनुकूल वातावरण बनेगा तथा आपके साथी आपका सहयोग करेंगे। भौतिक विकास का योग अच्छा है।

मकरः- आज आपका ध्यान नई योजनाओं में लगेगा। कानूनी विवाद में सफलता, स्थान परिवर्तन की योजना सफल हो सकती है।

कुंभः- आज आपके कार्यक्षेत्र के वातावरण में सुधार होगा। किसी सहकर्मी या बॉस के द्वारा पार्टी देने से और भी चहल पहल बढ़ेगी। नए प्रोजेक्ट पर भी कुछ काम शुरू हो सकता है।

मीनः- बिजनस के मामले में थोड़ा सा जोखिम उठाएं तो बड़ा लाभ होने की आशा है। रोजमर्रा के कामों से परे कुछ नए कामों में हाथ आजमाएं। किसी अपने के लिए कुछ पैसों का इंतजाम करना पड़ सकता है।

टिक्का मसाला बनाने विधि ...

सामग्रीः

पानी - 1.5 लीटर, नमक - 1 टीस्पून, तेल -1 टेबलस्पून, पास्ता - 400 ग्राम, दहीं - 300 ग्राम, लहसुन - 1 टेबलस्पून, हल्दी- 1 टीस्पून, गर्म मसाला - 1 टीस्पून, जीरा - 1 टीस्पून, धनिया- 1 टेबलस्पून, मक्खन - 50 ग्राम, प्याज - 140 ग्राम, पास्ता सॉस - 70 ग्राम, फ्रेश क्रीम - 200 मि.ली, चेडर चीज - 80 ग्राम, मोजेरेला चीज - 80 ग्राम

विधि-

1. सबसे पहले एक पैन ले, उसमें 1.5 लीटर पानी, 1 टीस्पून नमक, 1 टेबलस्पून तेल, 400 ग्राम पास्ता डालकर अच्छे से मिलाएं। 2. मिश्रण को 8 से 10 मिनट तक उबाल लें। 3. उबालने के बाद पास्ता को सुखा दें और फिर एक साइड पर रख दें। 4. अब एक मिक्सिंग बाउल में 300 ग्राम दहीं, 1 टेबलस्पून लहसुन, 1 टीस्पून दहीं, 1 टीस्पून गर्म मसाला, 1 टीस्पून जीरा, 1 टेबलस्पून धनिया डालें, फिर सारी सामग्री को अच्छे तरीके से मिक्स करें। 5. अब एक पैन में 50 ग्राम मक्खने लें, उसमें 140 ग्राम प्याज अच्छी तरह ब्राउन होने तक भूनें। 6. उस सामग्री में 70 ग्राम पास्ता सॉस को अच्छी तरह से मिक्स करें। 7. फिर 1 टेबलस्पून फ्रैश क्रीम और 1 टीस्पून नमक डालकर अच्छी तरह से मिक्स करें। 8. अब सारी सामग्री को 7 से 8 मिनट तक धीमी आंच पर पकाएं। 9. गर्म होने के बाद एक ब्लैंडर में डाल दें।फिर ब्लैंडर में तैयार दहीं और पेस्ट को मैश करें। 10. अब एक मिक्सिंग बाउल में उबला हुआ पास्ता, तैयार सॉस, 80 ग्राम चेडर चीज, 80 ग्राम मोजेरेला चीज डालकर अच्छी तरह मिलाएं। 11. तैयार समान को बेकिंग ट्रे में निकाल लें, अब चेडर चीज और मोजेरेला चीज के साथ गार्निश करें। 12. तैयार सामग्री को ओवन में 180 डिग्री पर तैयार होने तक पकाएं। 13. अब इसे ओवन से निकालें और बारीक कटे धनिया के साथ गार्निश करें। 14. टिक्का मसाला मेक एन चीज बनकर तैयार है, इसे गर्मा-गर्म सर्व करें।

शब्द सामर्थ्य- 6

बाएं से दाएं

1. खूब कसा हुआ, फुर्तीला, जो शिथिल व आलसी न हो 3. सार्वजनिक स्थान, संस्था, अस्तित्व, समिति 4. पौरुष, पुरुषत्व, मर्द होने का भाव 6. अंधेरा, अंधकार 7. लिपाई करना 9. शरीर, काया, जिस्म 10. मां के पिता, विभिन्न 12. महीना, मास 14. प्रियतम, बलमा, सजना 15. पांडवों का सबसे छोटा भाई 17. नशा, घमंड, खाता 19. चनोपज, वन से प्राप्त सामाग्री 21. शक्तिशाली, बलवान 24. तीव्र इच्छा 25. हथेली।

ऊपर से नीचे

1. निंदा, बुराई 2. निर्जीव, निष्प्राण 3. ध्वनियों या स्वरों का विशिष्ट लय में प्रस्फुटन, धुन, म्युजिक 4. झुका हुआ, विनीत 5. रूठे हुए को प्रसन्न करना, राजी करना 8. आश्रय, शरण 11. जन्म, जिंदगी 12. इंसानियत, मनुष्यता 13. रास्ता, मार्ग 14. एक हिंदी महीना, श्रावण 15. सपाट, जो उबड़-खाबड़ न हो 16. पति का छोटा भाई 18. गहरा कीचड़, पंक 20. आत्मा, अंतःकरण (उ.) 22. बीता हुआ या आने वाला दिन 23. बगुला।

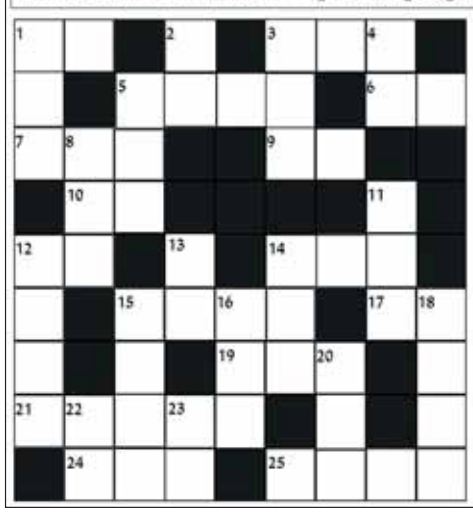

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 05 का हल

गु	मा	न			प	यो	द	
न		ह	क	दा	र		ल	य
ह	वा	ला	त		च		द	म
गा			रा	ज	म	ह	ल	
र	ई	स		ग		स		अ
	मा		प	त	वा	र		ल
ख	न	क	ना		ह	त		बे
स	दा		ह		वा		शो	ला
रा	र				ही	र	क	

सू-दोकू- 6

	7			4		3		
2			3			9		4
	6			2				
3		1			7		4	
	2			1			6	
8			9		4			1
		2		3		7		
1			7		2	4		3
	5	3		8			7	2

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गों का एक खंड बनता है। 2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते है। 3. बाएं से दाएं और ऊपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.05 का हल

9	2	8	3	1	5	7	4	6
4	1	6	8	9	7	2	5	3
7	3	5	4	6	2	8	1	9
2	7	3	9	8	1	4	6	5
5	4	1	6	7	3	9	2	8
6	8	9	2	5	4	1	3	7
3	6	2	7	4	9	5	8	1
8	5	7	1	2	6	3	9	4
1	9	4	5	3	8	6	7	2